



JAIN AHIMSA TIMES

IN COMMUNITY SERVICE FOR 14 CONTINUOUS YEARS
THE ONLY JAIN E-MAGAZINE • WORLD OVER + 100000 READERSHIP



परस्त्रीपथते जीवानाम्

Volume : 143

Issue No. : 143

Month : June 2012

"भगवान महावीर शांति की खोज में महल छोड़ दिया और हम सभी शांति की कीमत पर एक महल की खोज में हैं"

SAINTS

आदिवासी जीवन में उतरती रोशनी -गणि राजेन्द्र विजय



जैन साधु-साध्वियां सदैव ही पैदल विचरण करते हैं। सुखी परिवार अभियान के प्रणेता गणि राजेन्द्र विजय पिछले 25 वर्ष में करीब-करीब पूरे देश की पैदल यात्रा कर चुके हैं। गणि राजेन्द्र विजय एक ऐसा व्यक्तित्व है जो आध्यात्मिक विकास और नैतिक उत्थान के प्रयत्न में तपकर और अधिक निखरा है। वे आदिवासी जनजीवन के उत्थान और उन्नयन के लिये लम्बे समय से प्रयासरत है और विशेषतः आदिवासी जनजीवन में शिक्षा की योजनाओं को लेकर जागरूक है, इसके लिये सर्वसुविधयुक्त करीब 12 करोड़ की लागत से जहां एकलव्य आवासीय माडल विद्यालय का निर्माण उनके प्रयत्नों से हो रहा है, वहीं कन्या शिक्षा के लिये वे ब्राह्मी सुन्दरी कन्या छात्रावास का कुशलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं। इसी आदिवासी अंचल में जहां जीवदया की दृष्टि से गौशाला का संचालित है तो चिकित्सा और सेवा के लिये चल्यमान चिकित्सालय भी अपनी उल्लेखनीय सेवाएं दे रहा है। अपने इन्हीं व्यापक उपक्रमों की सफलता के लिये वे कठोर साधना करते हैं और अपने शरीर को तपाते हैं। एक-एक दिन में वे 50-50 किलोमीटर की पदयात्राएं कर लेते हैं और इन यात्राओं में आदिवासी लोगों में शिक्षा के साथ-साथ नशा मुक्ति एवं रूढ़ि उन्मूलन की अलख जगाते हैं। इन यात्राओं का उद्देश्य है शिक्षा एवं पढ़ने की रुचि जागृत करने के साथ-साथ आदिवासी जनजीवन के मन में अहिंसा, नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था जगाना है। हर आदमी अपने अन्दर झांके और अपना स्वयं का निरीक्षण करे। आज मानवता इसलिए खतरे में नहीं है कि अनैतिकता बढ़ रही है। अनैतिकता सदैव रही है- कभी कम और कभी ज्यादा। सबसे खतरे वाली बात यह है कि नैतिकता के प्रति आस्था नहीं रही।

यात्राएं गणिजी के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, वे इन यात्राओं में प्रतिदिन सुबह से शाम तक हजारों लोगों से सम्पर्क करते हैं, उन्हें ग्रामीण भाषा में समझाते हैं। उन्हें अपना गौरव प्राप्त करने का, अपने होने का भान कराते हैं। उनका कहना है कि आदिवासी समाज को उचित दर्जा मिले। वह स्वयं समर्थ एवं समृद्ध है, अतः शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिये स्वयं आगे आए। एक तरह से एक संतपुरुष के प्रयत्नों से एक सम्पूर्ण पिछड़ा एवं उपेक्षित आदिवासी समाज स्वयं को आदर्श रूप में निर्मित करने के लिये तत्पर हो रहा है, यह एक अनुकरणीय एवं सराहनीय प्रयास है।

त्याग, साधना, सादगी, प्रबुद्धता एवं करुणा से ओतप्रोत आप आदिवासी जाति की अस्मिता की सुरक्षा के लिए तथा मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने के लिए सतत प्रयासरत हैं। मानो वे दांडी पकड़े गुजरात के उभरते हुए 'गांधी' हैं। इसी आदिवासी माटी में 19 मई, 1974 को एक आदिवासी परिवार में जन्म गणि राजेन्द्र विजयजीम मात्र ग्यारह वर्ष की अवस्था में जैन मुनि बन गये। बीस से अधिक पुस्तकें लिखने वाले इस संत के भीतर एक ज्वाला है, जो कभी अश्लीलता के खिलाफ आन्दोलन

करती हु ए दिखती है, तो कभी जबरन धर्म परिवर्तन कराने वालों के प्रति मुखर हो जाती है। इस संत ने स्वस्थ एवं अहिंसक समाज निर्माण के लिये जिस तरह के प्रयत्न किये हैं, उनमें दिखावा नहीं है, प्रदर्शन नहीं है, प्रचार-प्रसार की भूख नहीं है, किसी सम्मान पाने की लालसा नहीं है, किन्हीं राजनेताओं को अपने मंचों पर बुलाकर अपने शक्ति के प्रदर्शन की अभीप्सा नहीं है। अपनी धून में यह संत आदर्श को स्थापित करने और आदिवासी समाज की शकल बदलने के लिये प्रयासरत है और इन प्रयासों के सुपरिणाम देखना हो तो कंवाट, बलद, रंगपुर, बोडेली आदि-आदि आदिवासी क्षेत्रों में देखा जा सकता है।

इतना ही नहीं यह संत गृहस्थ जीवन को त्यागकर गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने के लिये जुटा है, इनका मानना है कि व्यक्ति-व्यक्ति से जुड़कर ही स्वस्थ समाज एवं राष्ट्र की कल्पना आकार ले सकती है। स्वस्थ व्यक्तियों के निर्माण की प्रयोगशाला है - परिवार। वे परिवार को सुदृढ़ बनाने के लिये ही सुखी परिवार अभियान लेकर सक्रिय है। उनका मानना है कि समाज में सुखी गृहस्थजीवन व्यतीत करने के लिए सहिष्णुता की बहु त जरूरत है। गणि राजेन्द्र विजयजी का मानना है कि इन्सान की पहचान उसके संस्कारों से बनती है। संस्कार उसके समूचे जीवन को व्याख्यायित करते हैं। संस्कार हमारी जीवनी शक्ति है, यह एक निरंतर जलने वाली ऐसी दीपशिखा है जो जीवन के अंधेरे मोड़ों पर भी प्रकाश की किरणें बिछा देती है। गणि राजेन्द्र विजयजी बच्चों को कच्चे घड़े के समान मानते हैं। उनका कहना है उन्हें आप जैसे आकार में ढालेंगे वे उसी आकार में ढल जाएंगे। बच्चों को संस्कारी बनाने की दृष्टि से गणि राजेन्द्र विजय विशेष प्रयास कर रहे हैं।

सुखी परिवार अभियान द्वारा गुजरात के छोटा उदयपुर एवं बडोदरा जिले के आदिवासी अंचल कवांट में निर्मित हु ए एकलव्य आवासीय मॉडल विद्यालय एक क्रांतिकारी मोड है। आदिवासी जनजीवन के लिए सेवा, शिक्षा, जनकल्याण की विशिष्ट योजनाएं सुखी परिवार अभियान के द्वारा लम्बे समय से संचालित की जा रही है। मेरी दृष्टि में गणि राजेन्द्र विजयजी के उपक्रम एवं प्रयास आदिवासी अंचल में एक रोशनी का अवतरण है, यह ऐसी रोशनी है जो हिंसा, आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद जैसी समस्याओं का समाधान बन रही है। गणि राजेन्द्र विजयजी के आध्यात्मिक आभामंडल एवं कठोर तपचर्या का ही परिणाम है आदिवासी समाज का सशक्त होना। सर्वाधिक प्रसन्नता की बात है कि अहिंसक समाज निर्माण की आधारभूमि गणि राजेन्द्र विजयजी ने अपने आध्यात्मिक तेज से तैयार की है। प्रेषक: ललित गर्ग, ई-253, सरस्वती कंुज अपार्टमेंट, 25 आई0 पी0 एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92, E-Mail : lalitgarg11@gmail.com

जैन साधु - साध्वियों का त्याग एवं तपस्या उच्च कोटि की: गहलोत



राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अपने 62 वें जन्मदिवस के अवसर पर गुरुवार 3 मई को जयपुर स्थित भवानी निकेतन परिसर पहुंचकर गणाचार्य विराग सागर जी महाराज का आशीर्वाद ग्रहण किया। गणाचार्य जी ने भी मुख्यमंत्री को उनके जन्मदिन पर बधाई देते हु ए उनकी लम्बी की उम्र कामना की। मुख्यमंत्री ने परिसर में मौजूद 200 करीब जैन साधु - साध्वियों एवं जैन समाज के गणमान्य लोगों को सम्बोधित करते हु ए कहा कि जैन साधु - साध्वियों का त्याग उच्च कोटि का होता है तथा इस कठोर त्याग व तपस्या का कोई विकल्प नहीं है, उन्होंने कहा कि भगवान महावीर द्वारा दिया गया सत्य एवं अहिंसा का संदेश राष्ट्रपिता

महात्मा गांधीजी ने अपने जीवन में उतारा और अहिंसा के माध्यम से देश को आजाद कराया। गहलोत ने कहा कि संयुक्त संघ राष्ट्र ने अहिंसा के इस संदेश का सम्मान करते हु ए गांधी 2 जयंती अक्टूबर को प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज दुनिया में हिंसा एवं आतंकवाद की चुनौती है और जरूरत इस बात कि है कि अपने विचारों के माध्यम से समाज में भाईचारे एवं सद्भाव का संदेश दिया जाये ताकि हिंसा एवं आतंकवाद को खत्म कर अमन कायम किया जा सके. उन्होंने कहा कि जोधपुर में वर्धमान जैन पाठशाला में प्राथमिक शिक्षा हासिल करने के दौरान भगवान महावीर की शिक्षाओं के संस्कार उन्हें भी बचपन में मिले हैं और उन्हें इस बात की खुशी है कि प्रयासरत 200

करीब साधु - साध्वियों का आशीर्वाद ग्रहण करने का मौका मिला. इस अवसर पर गणाचार्य विराग सागर जी महाराज ने कहा कि नशामुक्ति के उनके अभियान के दौरान आयोजित नशामुक्ति शिविरों में हमेशा मुख्यमंत्री गहलोत के संदेशों ने लोगों को प्रेरणा दी है. उन्होंने उपस्थित लोगों का आह्वान किया कि समाज को नशामुक्त एवं व्यसन मुक्त बनाने का संकल्प लें, उन्होंने कहा कि पिछले साढ़े तीन वर्षों में राजस्थान में हुई प्रगति की आमजन द्वारा काफी सराहना की जा रही है. उन्होंने समस्त साधु - साध्वियों की ओर से मुख्यमंत्री को उनके जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए उनके सुदीर्घ जीवन की कामना की। उन्होंने गहलोत को प्रकाशनों का संग्रह एवं स्मृति चिन्ह भी भेंट किया. उन्होंने बताया कि इन प्रकाशनों में धुम्रपान को हतोत्साहित करने एवं नशामुक्त जीवन को बढ़ावा देने के लिये चित्रमय संदेश दिये गये हैं. इससे पहले मुख्यमंत्री को भवानी निकेतन परिसर में बड़ी संख्या में उपस्थित जैन समाज के पुरुषों, महिलाओं एवं बच्चों ने 62 उनके वें जन्मदिन की बधाई एवं शुभकामनाएं दी. मुख्यमंत्री सभी से आत्मीयता से मिले और उन्होंने हाथ हिलाकर उनका अभिवादन किया तथा उन्हें धन्यवाद दिया। प्रेषक: Shri Pushpendra Muniji M. S., E-Mail : pushpendramuni@gmail.com

राष्ट्रसंत मुनि तरुण सागर महाराज के सागवाड़ा प्रवेश पर उमड़ा जन सैलाब



क्रांतिकारी राष्ट्रसंत मुनि तरुण सागर महाराज के जेठाना से विहार कर नगर प्रवेश पर संकल दिगम्बर जैन समाज ने गगन भेदी जयकारो के साथ अगवानी करते मुख्य स्वागत द्वार पर पादप्रक्षालन किया। साथ ही जैन युवको द्वारा गार्ड ऑफ ओनर दिया गया व वन्देमात्रम का गान किया गया। दिगम्बर जैन समाज के क्रान्तिकारी राष्ट्रसंत तरुण सागर महाराज के सात दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम के तहत चार दिवसीय कड़वे प्रवचन के लिये जेठाना से काबीना मंत्री महेन्द्रजीत सिंह मालवीया, सासंद ताराचन्द्र भगोरा, क्षेत्र के विधायक सुरेन्द्र कुमार बामणिया साथ पैदल विहार कर सागवाड़ा नगर के गमलेश्वर महादेव मंदिर के सामने पहुँचने पर संकल दिगम्बर जैन समाज द्वारा बनाये गये मुख्य स्वागत द्वार पर पूर्व काबीना मंत्री कनकमल कटारा द्वारा स्वागत किया गया वही समाज के सेठ दिलीप कुमार नोगामीया एवं समाज के ट्रस्टी गणो द्वारा पादप्रक्षालन किया गया जहा से संत का काफिला जयकारो व धार्मिक गीतो से साथ खोडनिया रियल स्टेट के सामने पहुँचा जहा जैन समाज के युवको द्वारा गार्ड ऑफ ओनर दिया गया। धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए क्रान्तिकारी संत तरुण सागर महाराज ने सभी को आशीर्वाद देते हुए कहा की चर्तमान करने का अभी आश्वासन नहीं दे सकता हु लेकिन चार दिन के इस कार्यक्रम में चर्तमास जैसा लाभ देने की कोशीश करूंगा।

MUNI TARUN SAGAR JI TO HOLD NEXT CHATURMAS AT AHMEDABAD

As announced by revered Muni Shri Tarun Sagarji Maharaj, during the course of his vihar, he will be holding the on-coming chaturmas starting from 3rd July, 2012 at Ahmedabad. On receiving this news, the followers of Digambar sect were extremely over-joyed. Shri Tarun Sagar ji Maharaj has earned great fame and popularity amongst his followers after listening his eloquent but bitter discourses. Details of chaturmas preparations would be announced in due course.

JAIN TEMPLES

MUMBAI JAINS SPENT CRORES TO CELEBRATE 200 YEARS OF JAIN GODIJI TEMPLE



The 18-day grand celebration to mark the 200 years of Shri Godiji Parshwanath Bhagwan Temple at Pydhonie have now ended. The celebration had started with sending sweets to each and every one of the 1.4 lakh Jain households in the city. The celebration included regular bhajans, maha aartis, rath yattras, rangoli, dances, mehendi and other programmes followed by food servings. The entire temple was splendidly decorated. The programmes were also attended by 250 over sadhus and sadhvis. To finance the programme bids were put to raise money. The money was also raised for the education and medical treatment of all sadhus and sadhvis. Muni Vimal Sagar Maharaj oversaw the entire celebrations. It is estimated that, in all around Rs. 13 crore was spent on various programmes and related events of which a major part was on food services. Ahimsa Times request the Mumbai Jain Community to think about such mega expenditures on celebrations as

food services. Ahimsa Times request the Mumbai Jain Community to think about such mega expenditures on celebrations as

the Jain religion fundamentally professes for the austerity in day to day life. Besides, the big money could have been used for better purposes and in the general long term interest.

कोटा में बने मंदिर में नहीं हुआ लोहे का उपयोग



कोटा. 25 कारीगरों ने आठ साल तक लगातार दिन रात काम करने के बाद तीन मंजिला विशाल जिनालय (जैन मंदिर) लगभग तैयार कर दिया है। रामपुरा बाजार स्थित बख्शपुरी कुंड की गली में बन रहे भगवान चंद्रप्रभु स्वामी श्वेतांबर मंदिर की अब फिनिशिंग का कार्य बाकी है। मंदिर समिति का दावा है कि साढ़े तीन करोड़ रुपए की लागत से हुए मंदिर निर्माण में कहीं भी लोहे का उपयोग नहीं हुआ है। श्वेतांबर जैन परंपरा के अनुसार मंदिर निर्माण में लोहे के उपयोग को अशुभ माना जाता है। मंदिर का निर्माण कार्य 6 दिसंबर 2004 में भूमिपूजन के साथ प्रारंभ हुआ था, जो अब पूर्ण स्वरूप लेने के अंतिम चरण में है। यह मंदिर शहर में श्वेतांबर समाज की तपागच्छ संप्रदाय का प्रमुख मंदिर है। मंदिर अध्यक्ष भूपेन्द्र कुमार चतर ने बताया कि मंदिर का निर्माण करीब साढ़े तीन करोड़ रुपए की लागत से हुआ है। जो अहमदाबाद और नाकोड़ा में बने श्वेतांबर जैन मंदिरों की तर्ज पर करवाया जा रहा है।

520 वर्ष पुराना है मंदिर - सचिव संजय शाह के अनुसार मंदिर का निर्माण यति महाराज माणक सागरजी ने आज से 520 वर्ष पहले करवाया था। मंदिर में मूलनायक 8वें तीर्थंकर भगवान चंद्रप्रभु भगवान की 21 इंच की अतिशयकारी प्रतिमा विराजमान है। इसके अलावा अन्य दो प्रतिमाएं हैं, वह भी भगवान चंद्रप्रभु जी की ही हैं। मंदिर में अब 21 प्रतिमाएं विराजमान की जाएंगी। जिसमें प्रथम मंजिल पर 15 प्रतिमाएं, दूसरी एवं तीसरी मंजिल पर तीन, तीन प्रतिमाएं विराजमान होंगी। मंदिर का निर्माण 57 फिट लंबाई और 40 फीट चौड़ाई में हुआ है। जिसमें 42 खंभों पर अहमदाबाद और नाकोड़ा की तर्ज पर विशेष कलात्मक नक्काशी करवाई गई है। मंदिर की छत एवं दीवारों पर संगमरमर की विशाल चट्टानों पर बारीक कलात्मक नक्काशी की है।

FESTIVALS & EVENTS

महावीरजी जयपुर में भगवान महावीर की विशाल रथयात्रा में उमड़ा सैलाब



महावीरजी / जयपुर, April 8, 2012 : श्री महावीरजी के वार्षिक मेले के तहत आचार्य विरागसागर महाराज व आचार्य सन्मान सागर महाराज के ससंघ के सान्निध्य में भगवान महावीर की विशाल रथयात्रा निकाली गई। रथयात्रा में श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा। श्रीमहावीरजी की रथयात्रा में शामिल होने श्रद्धालु शुक्रवार रात ही श्री महावीरजी एवं मंदिर परिसर में आ डटे थे। मुख्य मन्दिर से महावीर भगवान की प्रतिमा का अभिषेक करने के बाद केसरिया वस्त्र पहने, रजत मुकुट लगाए इंद्रों का रूप धारण किए श्रद्धालुओं ने प्रतिमा को मंदिर से स्वर्णिम आभा से सुसज्जित रथ में विराजमान किया। इससे पहले प्रबंधकारिणी कमेटी ने मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की मूर्ति निकालने वाले चर्मकार वंशज के प्रतिनिधि का सम्मान किया गया। इसके बाद रथयात्रा का शुभारंभ हुआ। सबसे आगे निशान का घोड़ा उसके बाद बैड स्वर लहरिया बिखेर रहा था। बैड के पीछे 21 केसरिया ध्वज रथयात्रा को विशिष्ट स्वरूप दे रहे थे। उसके पीछे धर्मचक्र और फिर जैन मूल संघ आमनाय भट्टारकजी की पालकी को उठाए श्रद्धालु चल रहे थे। पालकी के पीछे ऐरावत हाथी लोगों का मन मोह रहा था। रथ पर उपजिला कलेक्टर प्रेमराम परमार व प्रबंधकारिणी कमेटी के अध्यक्ष पूर्व न्यायमूर्ति एन. के. जैन सारथी के रूप में बैठे थे।

INTERNATIONAL JAIN CONFERENCE ON BIOETHICS

An International Jain Conference on 'Bioethics: Religious and Spiritual Approaches' will be organized at Claremont Lincoln University, Texas, U. S. A. on August 24-25th, 2012. Keynote speakers include Dr. Cromewell Crawford, University of Hawaii, Dr. Abdulaziz A. Sachedina, University of Virginia, Dr. James Hughes, Trinity College, and D. K. Bobra, M. D. The conference presupposes that religious and spiritual traditions can assist doctors and ethicist in thinking through these questions and coming to answers. Paper abstracts in 300-1000 words, addressing any of the overlaps between bioethics and the religious traditions, including procreation, alternative medicines, birth and related issues (abortion, in vitro fertilization population control, etc.) , use of stem cells, cloning the ethics of medicals research, end of life issues, can be sent by may 15th 2012 to Mathew Zaro Fisher E-Mail : Mathew.fisher@cqu.edu

JAIN CELEBRITY – INTERVIEW

MR. AVINASH CHORDIA, PRESIDENT AISSJC



Recently in a fiercely fought nationwide election process for the Presidentship of All India Svetamber Sthanakwasi Jain Conference, Mr. Avinash Chordia, New Delhi won the prestigious chair. The whole of the community very actively participated in election process and voted for a young and dynamic personality. The community hopes, Mr. Avinash Chordia will bring new vision and programmes for the Sthanakwasi community and Jain Samaj as a whole. Ahimsa Times congratulates Mr. Avinash Chordia on his taking over the presidentship of AISSJC. To know about the mission of Mr. Chordia, Ahimsa Times forwarded a few questions (over email) to him and we are indeed thankful to Mr. Chordia for the quick response. We are reproducing both the question and answers for our readers without any editing at our desk.

Q: In your views, what are expectations of the community from you?

Ans: My fellow beings in the Jain community expect from me as National President of All India S. S Jain Conference, to strengthen the structure of our organization and expand its horizons. The have-nots very rightly expect the maximum aid and support. With the help of our learned philanthropist members of the community we will be able to accomplish it. We would like to inculcate the feeling of "Good and Well being for All" (बहु जनहिताय बहु जनसुखाय).

Ques: Have you declared any specific programme to be undertaken during your tenure as the National President of AISSJC?

Ans: We endeavour to fulfill the aspirations of our community through various programmes such as "Jeevan Prakash Yojna", "Manav Seva Yojna", "Jeev Daya Yojna". We fulfill the needs for education, medical aid and providing support system for the needy. For birds and animals also we spend a lot of money & energy. I visualize that We Sthanakwasi Jains through our maternal institution AIJJS should be recognized not just by their name but for the type of projects undertaken by them. I have started to implement projects to brighten the eye obliterated by the tears. It is our bounden duty to look after the welfare, respect and reverence, the progress and well being of our Saints. We have various sub-committees. Responsibilities are shared by senior and experienced persons who are providing selfless service to our esteemed organization. We will leave no stone unturned to meet the challenges.

Ques: Do you foresee any major challenges in your assignment? If yes, how do you intend to deal with those?

Ans: Many type of challenges are associated with the National Presidentship of such a prestigious Association. We have not only to strengthen our Association but work for the unity and development of each member of our community. In respect of our Saints we have to look after the progress and respect of our learned Gurus who have abandoned the luxuries of life in as much as they do not keep any belongings, nor any permanent place to stay and travel barefoot and follow many strict rituals. We have to develop many programmes with the help of Senior, Experienced and various Philanthropists which are available in abundance within our community. With these programmes I would be able to meet and overcome the challenges with flying colours.

Ques: Would you like to make any request or appeal to our revered saints?

Ans: We always sit at the feet of our revered Saints with our folded hands and every step is taken with the guidance and concurrence of our (Munivrinda) Saints. The policies adopted by the Jain Conference have always the blessings of our saints who enlighten our path. The members of community and the conglomerate of our saints are complimentary to each other. It is my earnest desire and my heartfelt request to our saints to work towards holding a conference of nation wide Sadhus. We have to learn from the history and brighten our future by such a conglomeration of saints with the active and responsible

support by the whole Jain community with AISSJC in the forefront to galvanize the activity. This will go a long way for the enlargement and development of the institution of our revered Saints and Community.

Ques: What is your message for the community members and what is the expectation of AISSJC from the community members.

Ans: I appeal to the worthy and the socially active respected people of our community to work ceaselessly not only for the unity and advancement of our Organization but also work for alleviating the lives of the needy and down trodden. They always look up to us for survival. Our community members are quite well off to fulfill their aspirations and it is our duty to give respect and citations for such work to arouse the feelings of others to follow. This is the only way by which we can justify our existence and fulfill our obligations by planning such activities which fulfill the aspirations of people at large. People will feel satisfied if it is achieved by the Conference.

About Shri Avinash Chordia Jain - Shri Avinash Chordia Jain is indeed a self made personality from Maharashtra. Born in 1964, he spent his childhood in the pious and picturesque city of Pune. After completing his education he shifted to Delhi and made it his Workplace. He did flourishing business in Delhi with dedication and hard work. He took pains to make his family members subservient to the gurus and gurunijee's imparting moral education which he got from his revered mother Smt. Basantibai Binjraj Chordia. His mother was awarded the Best Mother Award , 2011 in Pune. With the blessings of his mother and full support in every walk of life from his better half Smt. Lata Avinash Chordia he plunged into humanitarian work becoming a warrior and torch bearer devoted to the Gurus and with their blessings he lighted the path of innumerable people, lifted them from suffering and pain through compassion.

He is blessed with two daughters Km. Khushboo and Km. Ekta and son Hitesh. During his presence in Delhi for the past 25 years, he got socially awakened to do good to the community. Soon he got attached to the Jain Community with a spark to enlarge his humanitarian services. He offered his services through All India Shwetamber Sthanakwasi Jain Conference. Soon he became actively associated with many social cultural and spiritual associations. He ceaselessly worked for the benefit of the community and paid his undivided attention and concrete contribution to the parent association of Jain Sthanakwasi Samaj's 106 year old AISSJC. In recognition of his services, He was appointed to the post of National Treasurer of the All India Shwetamber Sthanakwasi Jain Conference. He made sweeping changes and brought glory to the Jain Conference.

He is also associated with several other philanthropic institutions as their office bearer such as Vishwa Maitri Mission, Jain International Trade Orgn.(JITO), Mahavir Pratishthan – Pune, Binjraj Chordia Charitable Trust, New Delhi, C M Jain Charitable Child Clinic, New Delhi, Vice President Sidhachalam Charitable Trust, Pune, Shri Shwetambar Sthanakwasi Jain Sabha, Karol Bagh, New Delhi, Dharmodaya Charitable Trust, Beed, Mah. Jain Samnopasak Sr. Sec. School, Delhi, Delhi & District Cricket Association (DDCA), World Brotherhood Organization. Correspondence Address : SHRI AVINASH JI CHORDIA JAIN, Shop no. 104, Bhagat Singh Market, Gole Market, Jain Bhavan ke Samne , New Delhi -110001, Phone / Fax : 011& 43573099] 23346899] 43573499 Mob.

AWARDS & RECOGNITION

STAMP RELEASED ON JAIN PERSONALITY KARPOOR CHANDRA KULISH



On 16th May 2012, India Post issued a commemorative stamp on Jain personality and renowned journalist Karpoor Chandra 'Kulish'. He was the founder of Rajasthan Patrika Group which is one of India's leading Hindi Media Groups. This is the second stamp on Jainism theme in the year 2012.

Karpoor Chandra 'Kulish' was born on 20th of March, 1926 in Soda village of Tonk district of Rajasthan. The early stage of his childhood education came under various stalemate but the brilliance of Kulish broke all the odds and eventually came to Jaipur. He started his journalistic life in 1951 and the major turn in his life came in the year 1956 when he started an evening daily in the form of Rajasthan Patrika. Started with this small newspaper, developed into a big Media Group. Today, newspapers of this Group are published in over 30 editions in 7 states. Patrika family comprises of around 1 crore and 94 lakhs readers per day. He was a vibrant person with mastery in every field of life. He was a poet, an author, a Journalist, a renowned thinker and contributed immensely in every field with his outstanding talent and knowledge. At the age of 60, Kulish dedicated his life to spirituality from journalism and brought the scientific side of Vedas in the reader friendly language through Patrika. Amongst the most important talks on Vedic Science were aired on Voice of America, BBC London and Radio German. As a director, he also proved his mettle by directing "Geet Govind" a classical composition in association with Doordarshan. Author of many books, Kulish also wrote a column named "Polampol" which is termed as his literary will.

He received "Haldi Ghati award" in 1983, "B.D Goenka award" in 1987, All India Editor's Guild Award" in 1999, " Dr. Headgovar Pragya award" in 1993. He was also conferred with "Ganesh Shankar Vidyarthi award" "Ganesh Shankar Vidyarthi award" by President K.R Narayanan. He also composed 11 Vedas in a single volume which is considered as the largest and most bulky in terms of weight in the world. Its weight is 16 kg and dimensions of 15:32 inches. He died on 17th Jan. 2006. Curtsey : Sudhir Jain.

अविनाश जैन को हरियाणा रत्न अवार्ड

नई दिल्ली, अराइज इंडिया लिमिटेड के एमडी अविनाश जैन को हरियाणा रत्न अवार्ड से सम्मानित किया गया है। चंडीगढ़ में आयोजित कार्यक्रम में पंजाब के राज्यपाल शिवराज पाटिल ने उन्हें यह सम्मान दिया। थोड़े से पैसे शुरुआत कर बहुत कम समय में अविनाश ने 650 करोड़ रुपये की अराइज इंडिया लिमिटेड कंपनी खड़ी कर दी। इस वक्त देश भर में अराइज इंडिया के नौ हजार डीलर हैं। अराइज इंडिया पंप, इन्वर्टर, बैटरी, एसी, मोबाइल फोन का निर्माण करती है। व्यवसाय के साथ ही अविनाश जैन समाज सेवा से भी जुड़े हैं।

SHRI DALVEER BHANDARI APPOINTED JUDGE OF THE INTERNATIONAL COURT OF JUSTICE AT THE HAGUE



Born on the 1st October, 1947 at Jodhpur, Justice Bhandari has been selected as judge of the International Court of Justice, The Hague. He has been the judge at the Supreme Court since the year 2005. After graduating in Humanities and Law on an international scholarship, he did Master of Laws from the Northwestern University, Chicago, USA. He also worked with the Northwestern Legal Assistance Clinic and appeared in Chicago Courts on behalf of the litigants of the said Clinic. He practiced in the Rajasthan High Court in Civil, Criminal and Constitutional branches of law from 1973 to 1976. During that period, he also taught as a part time lecturer in the Faculty of Law, Jodhpur University. He shifted to Delhi from Jodhpur in 1977 and practiced in the Supreme Court till his elevation to the Delhi High Court in March 1991. He was appointed as the Chief Justice of Maharashtra High Court on 25th July, 2004. He was elevated as a Judge of the Supreme Court on 28.10.2005. Tumkur University, Karnataka conferred the degree of Doctor of Laws (LL.D) on Mr. Bhandari for his magnanimous contribution to law and justice.

AHIMSA, HEALTH & VEGETARIANISM

मायावती ने यू0 पी0 में 8 अत्याधुनिक कत्लखानी



मायावती ने यू0 पी0 में 8 अत्याधुनिक कत्लखाने के लिए जो टेंडर मंगवाएँ हैं उसमें ऐसी मशीनों का प्रयोग होगा जो 1 दिन में हजारों मवेशियों की 'हत्या' करेगी एक ऐसी मशीन है जिसमें पशु को एक संकरी गली में घुसेड़ा जाता है और आखिरी सिरे पर एक दर्पण होता है मवेशी उसे छूने के लिए जैसे ही अपना सिर अंदर करता है मशीन उसकी गर्दन को जकड़ लेती है और तुरंत उसका सिर धड़ से अलग हो जाता है क्या आपको पता है की उत्तर प्रदेश में 15 कत्लखाने खोलने की अनुमति चीफ मिनिस्टर ने दी है? जहां एक कत्लखाने में एक दिन में 10000 (दस हजार) जानवरों को कटा जायेगा तो एक दिन में 15 कत्लखानों में 1,50,000 जीवों की हिंसा होगी अगर आप जीव दया

प्रेमी हैं तो इसके समर्थन में खड़े हो जाएँ और C. M. को अनुमति वापस लेनी पड़े By : Prakash Lakhara & Mr. Sojanya Goel,

E-Mail : sojanyagoel@gmail.com

ALLAHABAD HIGH COURT DIRECTS GOVERNMENT TO IMPOSE BAN ON GUTKA AND PAN MASALA



The Allahabad High Court, while considering a petition filed by Indian Dental Association, U. P. and Dr. Anil Kumar Mehrota has urged the Government of Uttar Pradesh to consider imposing a ban on the sale, distribution and use of tobacco and Nikotin in food products on the lines of Madhya Pradesh Government. The petitioner mentioned that according to research conducted by a Mumbai NGO, The youngsters these days consume 5 to 15 packets of Gutka every day. Some of them go to the extent of consuming 30 packets every day. Harmful constituents are used during the manufacture of gutka and pan masala, which may become cause for Cancer like dreadful disease. The court has also asked the Government to depute a state secretary to explain the reason why the order for banning the sale of gutka and pan masala was not carried out according to the Food Safety and Standards on sale regulation-2011.

BAN ON SALE OF MEAT AND EGGS BY MUNICIPALITY AT PALITANA

The Municipality of Palitana in the district of Bhavnagar has unanimously passed a resolution recently to impose a total ban on the sale of meat, mutton and eggs in the precincts of Palitana town. Earlier, Jain Muni Shri Maitriprabh Sagar Ji Maharaj had gone on hunger strike in favour of the ban.

DENTAL X-RAY MAY LEAD TO BRAIN TUMOR

According to a report published recently by the American Cancer Society, frequent X-ray of teeth may cause brain tumor, this variety being known in medical circles as 'marnigioma', which is said to be quite weak but still a possibility of cancer can not be ruled out. It has been observed that those who undergo X-ray of teeth more frequently had contracted marnigioma tumor. Research scientists had found on inspecting some 1433 patients of brain tumor that most of them had suffered from marnigioma' tumor. The chances of this occurrence was found to be much greater in young patients below the age of 10 years.



DIKSHA NEWS

सांसारिक जीवन त्याग कर जया बर्नी जिनाज्ञाश्री



त्याग का पर्याय बन चुकी जिले के गोगुंदा क्षेत्र में स्थित बगडुंदा की पावन धरा पर रविवार को एक बार फिर नया अध्याय लिखा गया। मौका भी कुछ खास ही था मुमुक्षुकी दीक्षा समारोह का। अभूतपूर्व जनमैदिनी की साक्षी में श्रमण संघीय प्रवर्तक गणेश मुनि ने 24 वर्षीय बाल ब्रह्मचारी जया डागलिया को दीक्षा प्रदान करते हुए संयम मार्ग पर चलने की अनुमति दी। इस तरह सांसारिक जीवन का परित्याग कर अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर मुमुक्षु जया का नया नाम साध्वी जिनाज्ञाश्री दिया गया। साथ ही नवदीक्षित साध्वी जिनाज्ञाश्री को उपप्रवर्तिका चारिर्तप्रभा की सुशिष्या साध्वी रुचिका की शिष्या घोषित किया गया। विदाई के दौरान मुमुक्षुके परिजनों की आंखें छलक उठी और वातावरण ममतामयी हो गया।

इससे पूर्व सबह साढे सात बजे वीरथल का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें वैराग्न जया ने उपस्थित साधु साध्वियों को अपने हाथों से अंतिम बार गोचरी बहराई। इसके पश्चात मुमुक्षु जया की शोभायार्ता निकाली गई। इस दौरान मुमुक्षुरथ में सवार थी। बेंडबाजों की धुन पर निकाली गई इस शोभायार्ता में सुमधुरस्वर लहरियों पर श्रावक श्राविकाएं झूमते हुए चल

रहे थे। वहीं युवा वर्ग वंदे वरम के जयघोष के साथ वातावरण में भक्ति रस का संचार कर रहे थे। गांव के विभिन्न मार्गों से होते हुए शोभायार्ता गुरु पुष्कर देवेन्द्र दरबार पहुंची। यहां मुमुक्षु जया ने सांसारिक जीवन के अपने अंतिम विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि पांच वर्ष पूर्व देखा गया सपना आज मूर्त रूप लेने जा रहा है। अपने 24 वर्षों के जीवन के दौरान माता पिता, भाई बहनों और अन्य सगे संबंधियों की ओर से मिले स्नेह का स्मरण करते हुए मुमुक्षुने कहा कि आज व्यक्ति सौ सुखों की कामन करते हुए एक दुख जीवन में आने पर परेशान हो जाता है। वह यह नहीं सोचता कि उसके पास 99 सुख तो हैं, फिर भी वह दुखी रहता है। बस यहीं प्रेरणा उसे सांसारिक जीवन को छोड़ने की प्रेरणा बनी और शाश्वत सुख के राज को समझकर वह संयम की दिशा में चल पड़ी। माता पिता की ओर से दिए गए संस्काररूपी बीज आज वृक्ष का रूप अखिलतयार कर चुका है। उन्होंने साध्वी चारिर्तप्रभा, साध्वी रुचिका का आभार प्रकट करते हुए कहा कि उनकी प्रेरणा से फुलवारी में नया फूल आया है। अंत में श्री संघ, माता पिता और श्रावक समाज से क्षमा याचना की। सांसारिक परिधानों को त्यागकर केसर युक्त श्वेत वस्त्रों से सज्जित मुमुक्षुने जब दरबार में प्रवेश किया।



इसके बाद दीक्षा की विधि प्रारंभ हुई। जिसमें 27 बार नवकार मंत्र, तसउत्तरी लोगस, नमोत्थुन, 3 बार करेमी भत्ते का पाठ प्रवर्तक गणेश मुनि ने दीक्षार्थी को पढाया, तत्पश्चात अहिंसा ध्वज और रजोहरण आशीर्वाद के साथ उसे प्रदान किए गए। साथ ही पार्त, ग्रंथ इत्यादि भी प्रदान किए गए। जब दीक्षार्थी को संयम प्रदान किया जा रहा था तब पांडाल में उपस्थित प्रत्येक श्रावक की आंखें नम थी वहीं परिवारजनों के चक्षुओं से हर्ष के आंसू प्रवाहित हो रहे थे। इससे पूर्व समारोह का शुभारंभ नवकार मंत्र महास्तुति से हुआ। इसके उपरांत रविन्द्र मुनि और श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि ने दीक्षा के महत्व की जानकारी दी। समारोह में दानवीर सेठ फूलचंद डागलिया का भी श्री गुरु पुष्कर संगठन समिति द्वारा स्वागत किया गया और उन्हें अभिनंदन पत्र, शॉल और माला प्रदान की गई। देश प्रदेश के दूर सुदूरप्रांतों से समागत अतिथियों का भी श्री संघ बगन्डुदा की तरफ से शॉल माला से स्वागत किया गया। प्रवर्तक गणेश मुनि ने जिनाज्ञाश्री को संबोधित करते हुए कहा कि संयम के प्रति जागरूकता और निर्देश संयम से प्रत्येक क्रिया तुम्हें करनी है। जागरूकता रखनी है। आत्मशोधन की प्रक्रिया ही दीक्षा है। डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि ने कहा कि दीक्षा एक बदलाव है। बिना बदले दीक्षा तक नहीं पहुंचा जा सकता। अनादि से भक्ति के मार्ग पर चलना दीक्षा है।

श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि ने दीक्षार्थी को संबोधित करते हुए कहा कि दीक्षा लेना सरल बात नहीं है, जो भाग्यशाली होता है वही संघ में दीक्षा ले सकता है। दीक्षा लेने के बाद गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण करना होता है। समारोह में डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि, रीतेश मुनि, प्रभात मुनि, डॉ. राजश्री, साध्वी आभाश्री, रूचिका, महिमाश्री, नमीताश्री, ममताश्री, सुमनश्री, वृष्टिश्री, विरक्ताश्री, विजेताश्री, विधिश्री, दीपिकाश्री, मंगलज्योति, विकास ज्योति, ऋजुप्रज्ञा आदि ने भी विचार व्यक्त किए। वहीं उदयपुर जिला प्रमुख मधु मेहता ने जिले के छोटे से गांव में इस तरह के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की। इस दौरान आयुड उदयपुर निवासी शांतिलाल कोठारी, यमुनाशंकर चौबीसा ने जोड़े सहित आजीवन शीलजन का नियम अंगीकार किया।

जहां जन्म वहीं दीक्षा : गांव में रविवार को आयोजित दीक्षा समारोह में एक बात यह खास रही कि मुमुक्षुजया का जन्म यहीं पर हुआ और उसे दीक्षा भी अपने पैतृक गांव में ही दी गई। ऐसा सौभाग्य बहुत ही कम लोगों को मिलता है। हालांकि इस गांव से पहले भी 7 बालक बालिकाएं दीक्षा ले चुके हैं, लेकिन इनकी दीक्षा गांव में नहीं बल्कि अन्य स्थान पर हुई थी। पुष्कर संप्रदाय में 58 वीं दीक्षा : विश्व संत उपाध्याय पुष्कर मुनि के संप्रदाय की शिष्या परिवार में रविवार को दी गई दीक्षा के बाद साध्वी जिनाज्ञाश्री का 58 क्रम बन गया। इसकी जानकारी पांडाल में मिलते ही समूचा श्रावक समाज खुशी से झूम उठा। साध्वी जिनाज्ञाश्री की बड़ी दीक्षा देने का समारोह 6 मई को गोगुंदा में आयोजित किया जाएगा। समारोह में ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष मांगीलाल चौधरी, सेवादल ब्लॉक अध्यक्ष सत्येन्द्रसिंह राणावत, ग्राम पंचायत सरपंच केसुलाल, बसंतीलाल डागलिया सहित बड़ी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित था। संचालन धनश्याम दोशी ने किया।

आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज का चौबीसवाँ दीक्षादिवस सम्पन्न-पैठणा



परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती, आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज (अंकलीकर) की सुविशुद्ध परम्परा के तृतीय पट्टाधीश परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के उत्तराधिकारी परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज का चौबीसवाँ दीक्षादिवस दिनांक ११-५-२०१२ को अतिशय क्षेत्र पैठण में सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रातः दस बजे विनयाजंलि सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा का प्रारम्भ श्रीमती कंचनमाला कासलीवाल

(नासिक) के द्वारा गाये गये मधुर मंगलाचरण के माध्यम से हुआ। बाहर से पधारे हुए गणमान्य श्रावकबन्धुओं ने गुरुजनों की चरणपादुका के समक्ष मंगल दीप को प्रज्वलित किया। ब्रह्मचारी श्री रवि जैन ने मानव जीवन में गुरु की आवश्यकता इस विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

तदुपरान्त आचार्यश्री के पादप्रक्षालन एवं पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ब्रह्मचारिणी निर्मला लुहाड़िया ने आचार्यश्री और उनके संघस्थ साधुओं को शास्त्रभेंट किये पूज्या गणिनी-आर्यिकाश्री सुविधिमती माताजी ने अपने प्रवचन में कहा कि आचार्यश्री का चौबीसवाँ दीक्षा मनाने हेतु हम सभी एकत्रित हुए हैं। आचार्यश्री आदर्श के हिमालय हैं। छोटी-सी आयु में उन्होंने जिन उपलब्धियों को प्राप्त किया है, वह दुर्लभ है। आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज का जीवन वटवृक्ष के समान है। जिस प्रकार वटवृक्ष एक छोटे से बीज से अपनी यात्रा प्रारम्भ कर विशालरूप धारण करता है, उसी प्रकार आचार्यश्री ने ब्रह्मचारी पद से अपनी यात्रा प्रारम्भ कर पट्टाचार्यत्व का पद प्राप्त किया। जिस प्रकार वटवृक्ष अनेक पक्षियों का आश्रयदाता है, उसी प्रकार आचार्यश्री अनेक शिष्यों के आश्रयदाता हैं और जिस प्रकार वटवृक्ष अनेक पथिकों को छाया और शीतलता प्रदान करता है, उसी प्रकार आचार्यश्री भव्य जीवों को अपनी शरण और आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

परम पूज्य परम्पराचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि पूर्व जन्म में अर्जित कर्मों के प्रभाव के रूप में वासनार्ये अवचेतन मन में पड़ी रहती है। उसी के कारण मन में वैकारिक-भाव और तन में विकृतिजन्य कर्म उत्पन्न होते हैं। जैसे ग्रामोफोन के रिकार्ड में कटे हुए खों चोंमें से ध्वनियों का उद्गम होता है, उसी प्रकार वासनाओं से नानाविध कामनाओं का उद्गम होता है। वासनासहित मन मनुष्य का दुर्दान्त शत्रु है, क्योंकि वह मनुष्य को कुकर्म करने के लिये प्रेरित करता है।

मनुष्य और बुद्धत्व के मध्य वासनाओं की मजबूत दीवार बन चुकी है। उस दीवार को गिराये बिना मनुष्य परमात्मा नहीं हो सकता। मनुष्य अज्ञानता के कारण बाह्य जगत् को संवारना चाहता है। उसी में वह सुन्दरता और सौख्य की कल्पना कर रहा है। उसे यह विवेक होना चाहिये कि संसार तभी सुन्दर प्रतीत होता है, जब अन्तःकरण शुचिर्भूत होता है। प्राप्त होने वाली विलास की सामग्रियों के द्वारा भी मनुष्य तब तक सुखी नहीं हो सकता, जब तक कि मन प्रसन्न नहीं होता। सुख बाहरी जगत् की देन नहीं है, वह तो अन्तस् का पावन संगीत है। मन प्रसन्न है तो सारी वस्तुयें सुखदायक और मन अप्रसन्न हो तो सारी वस्तुयें दुःखदायक होती हैं। बाहर जो कुछ परिलक्षित हो रहा है, वह सब अन्तस् का प्रक्षेपण है। अतः सुखेच्छ भव्य को वासनाओं का विलय करने विषयक प्रयत्न करना चाहिये।

इस कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्रह्मचारी श्री सुमित जी जैन (मन्दसौर) ने किया। उन्होंने सभा को ज्ञात कराया कि आचार्यश्री ने अब तक कुल मिला कर पचहत्तर ग्रन्थों का अनुवाद किया है। आचार्यश्री की प्रेरणा और परिश्रम के फलस्वरूप एक हजार अठारह ग्रन्थ Internet पर www.jaingranth.com निःशुल्क उपलब्ध हैं। आचार्यश्री का विचार है कि पाँच हजार ग्रन्थ नेट पर उपलब्ध कराये जाये। आचार्यश्री नेट के माध्यम से जैन-पाठशाला प्रारम्भ करने वाले हैं। इसके लिये आवश्यक तैयारियाँ पूर्ण हो चुकी हैं। ज्ञातव्य है कि आचार्यश्री की जन्मभूमि औरंगाबाद है। वे इस वर्ष औरंगाबाद में ही वर्षायोग करने वाले हैं। प्रेषक: Pattacharya Shree Suvidhisagarji, E-Mail : suvidhiguru@gmail.com

Mumukshu Hemlata, an ardent follower of Terapanth Acharya Shri Mahashraman ji and disciple of Muni shri Prashant Kumar Ji, will be accepting Jain diksha on the 31st May, 2012 at her place of birth, Samdari, a small town in western Rajasthan. Thousands of devotees from all over the country are expected to attend the diksha celebrations. In the meantime, on her arrival at Ahmeadbad, a grand procession, called 'shobha yatra' was taken out through the streets of the city. A letter of eulogy along with a set of books on Jain religion was presented to mumukshu Hem Lata on the occasion. Various eminent persons from Terapanth Sabha were present to participate in the procession. Muni Prashant Kumar in his illuminating and inspiring discourse, described how the detachment, renouncement and austerity, devotion and spiritual endeavours of a saint can lead to eternal peace and eventually help to achieve salvation.

READER'S VIEWS & NOTES

जैन साधू साध्वियों के चातुर्मास की शास्त्रीय (आगमिक) विधि

चातुर्मास का समय नजदीक आ रहा है. विभिन्न स्थानों के जैन संघ पूज्य साधू साध्वियों के चातुर्मास की व्यवस्था में लगे हैं. लगभग सभी जैन साधू साध्वियों के चातुर्मास तय हो चुके हैं. इसमें जैन धर्म के सभी समुदाय श्वेताम्बर, दिगंबर, मूर्तिपूजक स्थानकवासी, तेरापंथी सभी सम्मिलित हैं।

ऐसे समय में यह जानना बेहद जरूरी है की जैन साधू साध्वियों के चातुर्मास की शास्त्रीय (आगमिक) विधि क्या है? क्या जो कुछ परंपरागत रूप से हो रहा है वह शास्त्र सम्मत है? अथवा सब कुछ मनमाने तरीके से चल रहा है? दिगंबर परंपरा एवं शास्त्रों के संबंध में मुझे ठीक से पता नहीं है परन्तु श्वेताम्बर समुदाय के सभी वर्गों के लिए शास्त्र आज्ञा स्पष्ट है. जैन आगमों के अनुसार साधू साध्वियों का चातुर्मास पहले से तय नहीं हो सकता है. कल्पसूत्र के अनुसार साधू साध्वी गण अपना चातुर्मास संवत्सरी प्रतिक्रमण करने के बाद ही घोषित करते हैं। पहले से चातुर्मास तय होने पर श्रावक गण उपाश्रय या तत्सम्बंधित स्थानों पर मरम्मत, रंगाई, पुताई आदि जो भी काम करते हैं वो चातुर्मास के निमित्त होता है. ऐसे में उन सभी आरंभ समारंभ का दोष चातुर्मास करने वाले साधू साध्वियों को लगता है. ऐसी स्थिति में उनका प्रथम प्राणातिपात विरमण (अहिंसा) व्रत खंडित होता है।

अतः शास्त्र आज्ञा स्पष्ट है की साधू साध्वी गण अपना चातुर्मास पहले से घोषित न करें। जैन आगमों के अनुसार साधू साध्वी गण चातुर्मास काल में एक स्थान पर रहने के लिए श्रावक संघ से प्रार्थना करते हैं. श्रावक संघ अथवा कोई व्यक्तिगत रूप से साधू साध्वियों की प्रार्थना स्वीकार कर उन्हें रहने का स्थान उपलब्ध करवा दे तो साधू साध्वी वहां पर ठहर सकते हैं एवं अपना चातुर्मास व्यतीत कर सकते हैं. यदि गृहस्थ उन्हें स्थान देना स्वीकार न करे तो वे अन्यत्र विहार कर जाते हैं। आज इस शास्त्र आज्ञा से विपरीत स्थिति प्रचलन में आ चुकी है. आज श्रावक संघ साधू साध्वियों से चातुर्मास हेतु प्रार्थना करते हैं. प्रायः संघ के सैंकड़ों लोग एकत्रित हो कर बस , ट्रेन या हवाई जहाज से दूर दराज क्षेत्र में रहे हुए साधू साध्वियों से चातुर्मास की विनती करने जाते हैं. ऐसा देखने में आता है की साधू साध्वी गण भी बहुत बार ऐसी स्थिति को प्रोत्साहित करते हैं. प्रायः बहुत मन मनुहार एवं अनेको वार विनती करने पर ही साधू साध्वी गण चातुर्मास की स्वीकृति देते हैं. इस तरह से संघ का बहुत समय व धन का अपव्यय होता है, साथ ही आरम्भ समारंभ भी होता है। विचारणीय बिंदु ये है की जब शास्त्र का स्पष्ट निर्देश है की साधू साध्वी गण चातुर्मास में ठहरने के स्थान के लिए गृहस्थों से स्थान की याचना करे, तब उससे विपरीत क्यों श्रावक संघ उनसे प्रार्थना करने जाता है? साधू साध्वी गण भी क्यों निरंतर इस स्थिति को प्रोत्साहित करते हैं? जैन आगमों के अध्ययन से ये बात स्पष्ट रूप से सामने आती है की साधू साध्वियों का चातुर्मास पहले से तय होना शिथिलाचार को बढ़ाने में मुख्य हेतु है। समस्त आचार्य एवं उपाध्याय भगवंतों एवं पूज्य साधू साध्वियों से निवेदन है की इस स्थिति के संबंध में पुनर्विचार करें एवं शास्त्र (आगम) आज्ञा के अनुसार व्यवस्था को पुनर्प्रतिष्ठित करें. श्रावक संघ भी जागरूक बन कर इस पूरी प्रक्रिया पर पुनर्विचार करे। From : Vardhaman Infotech, Jaipur, Rajasthan, E-Mail : info@vardhamaninfotech.com

जैन धर्म में दिगम्बर साधू नग्न क्यों?

लोक में नग्नत्व सहज ही जन्म से आया है। दिगम्बर मुनिराजो के समस्त गुणों में नग्नत्व एक विशेष गुण है। जन साधारण व अन्य जाति के लोग जब दिगम्बर मुनि को देखते हैं तो उनके मन में अनेक प्रकार की शंकाए, कुशंकाए उत्पन्न हो जाती हैं, पर प्रकृति स्वं कहती है कि संसार में जब समस्त जीव का जन्म होता है तो वह नग्न होता है और मरणोपरांत भी नग्न कर दिया जाता है। लेकिन जन्म और मरण के मध्य अंतर्मन की दुर्बलता पाश्विक वासनाए उसे वस्त्र पहनने को मजबूर कर देती हैं। दिगम्बर मुनि विकार रहित एवं ममत्व रहित होते हैं। जो जैन कुल में जन्म लेने के बाद भी दिगम्बर मुद्रा से घृणा करते हैं वे नियम से मिथ्यादृष्टि होते हैं।

आज प्रश्न यह उठता है कि दिगम्बर साधू भी साधू बनने से पहले हमारी तरह ही एक साधारण इंसान थे परन्तु उनके पुण्य के योग ने उन्हें साधू बना दिया पर हमें निंदा करने से पहले यह सोचना चाहिए क्या हम उनकी जैसी क्रिया का पालन कर सकते हैं? दिगम्बर साधू सूर्य की ललित किरणों से तपती धूप पर नंगे पैर विहार करते हैं। क्या हम तपती धूप में १ किलोमीटर भी चल सकते हैं। दिगम्बर साधू तो ठण्ड में भी नंगे पैर विहार करते हैं क्या हम कर सकते हैं? रास्ते में चाहे कांटे हो चाहे पत्थर नुकीले हो उन्हें चलना ही होता है पर क्या हम चल सकते हैं काँटों पर? सर्दियों में हम लोग विभिन्न प्रकार के गर्म कपडे पहनते हैं फिर भी ठण्ड से ठिठुरते रहते हैं पर जैन साधू तो सर्दियों में भी नग्न रहते हैं क्या हम उनकी तरह रह सकते हैं? सर्दियों में हम लोग बिस्तर पर सोते हैं रजाई कम्बल का भी प्रयोग करते हैं फिर भी ठण्ड लगती है पर जैन साधू तो लकड़ी के फटे पर बांस की चटाई बिछाकर सोते हैं क्या हम सो सकते हैं? अगर नहीं तो आलोचना क्यों? पहले जैन धर्म के आधार को पहचानो। From R. P. Jain, Delhi, E-Mail - rpj@rediffmail.com

CHATURMAS 2012 NEWS (STHANAKWASI SECT)

श्रमण संघ द्वारा 2012 के घोषित चातुर्मास

1. उदयपुर, राजस्थान

1. प्रवर्तक राष्ट्रसंत श्री गणेश मुनि जी शास्त्री
2. उपप्रवर्तक श्री जिनेन्द्र मुनि जी 'काव्यतीर्थ'
3. तपस्वीरत्न श्री प्रवीण मुनि जी म० सा०

सम्पर्क सूत्र : अमर जैन साहित्य संस्थान, गणेश विहार, पो० उदयपुर-313002, राजस्थान, फोन नम्बर : 0294- 2583741

2. गुडगांव, हरियाणा

1. उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी
2. उपप्रवर्तक डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी
3. श्री सुरेन्द्र मुनि जी
4. श्री दीपेश मुनि जी
5. श्री गजेन्द्र मुनि जी

सम्पर्क सूत्र : श्री एस० एस० जैन सभा, जैन स्थानक, रेल्वे रोड़, पो० गुडगांव, हरियाणा

3. उदयपुर, राजस्थान

1. श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि जी
2. डॉ० द्वीपेन्द्र मुनि जी
3. डॉ० पुष्पेन्द्र मुनि जी

सम्पर्क सूत्र : तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, शास्त्री सर्कल, पो० उदयपुर, फोन नम्बर : 0294-2413518, E-Mail :

tguru1966@gmail.com

4. बेंगलोर, चिकपेट, कर्नाटक

1. उपप्रवर्तक पं० रत्न श्री नरेश मुनि जी
2. श्री शालीभद्र मुनि जी
3. श्री विकसित मुनि जी

सम्पर्क सूत्र : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ , एम० पी० लेन, चिकपेट क्रॉस, बेंगलोर-560053, फोन नम्बर : 080-22383283

5. उदयपुर, राजस्थान

1. उपप्रवर्तनी महासाध्वी श्री कौशल्याकुमारी जी

2. साध्वी श्री विनयवती जी
3. साध्वी श्री सुदर्शनप्रभा जी
4. साध्वी श्री डॉ० सुलक्षणप्रभा जी

सम्पर्क सूत्र : श्री गुरु पुष्कर नवकार तीर्थ भवन, गायत्री नगर, हिरण मगरी, उदयपुर-313004, फोन नम्बर : 09413093610

6. जोधपुर, राजस्थान

1. उपप्रवर्तिनीमहासाध्वी श्री विमलवती जी
2. साध्वी श्री ज्ञानप्रभा जी

सम्पर्क सूत्र : श्री अमर हर्ष प्रेम साहित्य संस्थान, 4 बी रोड़, 361 सरदारपुरा, - जोधपुर, राजस्थान, फोन नम्बर : 09460889929

7. बीजापुर, कर्नाटक

1. उपप्रवर्तिनीमहासाध्वी श्री चंदनबाला जी
2. साध्वी श्री देवेन्द्रप्रभा जी
3. साध्वी श्री धर्मज्योति जी
4. साध्वी श्री नवीनज्योति जी

सम्पर्क सूत्र : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, राम मंदिर रोड़, पो. बीजापुर-586101, कर्नाटक, फोन नम्बर : 08867498421

8. गदग, कर्नाटक

1. महासाध्वी श्री प्रियदर्शना जी
2. साध्वी श्री किरणप्रभा जी
3. साध्वी श्री रत्नज्योति जी
4. डॉ० श्री विचक्षणश्री जी
5. डॉ० श्री अर्पिताश्री जी

सम्पर्क सूत्र : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, महावीर नगर, अविगिरी कम्पाउण्ड,पो. गदग-582101, कर्नाटक

9. बेंगलोर, हीराबाग, कर्नाटक

1. उपप्रवर्तिनीमहासाध्वी श्री सत्यप्रभा जी
2. साध्वी श्री चंदनप्रभा जी
3. साध्वी श्री धर्मशीला जी
4. साध्वी श्री राजमती जी
5. साध्वी श्री पुनीतज्योति जी
6. साध्वी श्री तरुणशीला जी

सम्पर्क सूत्र : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, हीराबाग, पो० बेंगलोर-313004, कर्नाटक

10. अहमदाबाद, शाहीबाग, गुजरात

1. उपप्रवर्तिनीमहासाध्वी श्री चारित्रप्रभा जी
2. साध्वी श्री विनयप्रभा जी
3. साध्वी डॉ. श्री रुचिका जी
4. साध्वी डॉ. श्री राजश्री जी
5. साध्वी श्री आभाश्री जी
6. साध्वी श्री महिमाश्री जी
7. साध्वी श्री नमिताश्री जी

8. साध्वी श्री जिनाजाश्री जी

सम्पर्क सूत्र : श्री राजस्थानी स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शाहीबाग रोड़, पो0 अहमदाबाद-380001, गुजरात, फोन नम्बर : 09374604928.

11. फरीदाबाद, हरियाणा

1. उपप्रवर्तिनीमहासाध्वी डॉ. श्री दिव्यप्रभा जी
2. साध्वी श्री अनुपमा जी
3. साध्वी श्री निरुपमा जी
4. साध्वी श्री भव्या जी
5. साध्वी श्री सौम्या जी

चातुर्मास स्थल : श्री एस0 एस0 जैन सभा, जैन स्थानक, सेक्टर-15, पो. फरीदाबाद, हरियाणा, फोन नम्बर : 09810123517

12. बैंगलोर, चिकपेट, कर्नाटक

1. महासाध्वी डॉ0 श्री दर्शनप्रभा जी
2. साध्वी श्री मेघाश्री जी
3. साध्वी श्री समीक्षा जी

सम्पर्क सूत्र : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, सिटी शाखा, चिकपेट क्रॉस, बैंगलोर-560053, कर्नाटक, फोन नम्बर : 080-22383283

13. भादसोड़ा, राजस्थान

1. महासाध्वी श्री मंगलज्योति जी
2. साध्वी श्री विकासज्योति जी
3. साध्वी श्री ऋजुप्रजा जी

सम्पर्क सूत्र : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैन स्थानक, भादसोड़ा, राजस्थान, फोन नम्बर: 9950840868

14. बल्लारी, कर्नाटक

1. डॉ0 श्री प्रतिभा जी
2. साध्वी श्री मल्लिश्री जी
3. साध्वी श्री आस्थाश्री जी
4. साध्वी श्री श्रद्धाश्री जी
5. साध्वी श्री ऋषिताश्री जी

सम्पर्क सूत्र : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैन क्लॉथ मार्केट, पो0 बैल्लारी-583101, कर्नाटक, फोन : 09448147350

15. पुना दत्तानगर, महाराष्ट्र

1. श्री संयमप्रभा जी
2. साध्वी श्री श्रुतप्रभा जी
3. साध्वी श्री चिन्तनप्रभा जी

सम्पर्क सूत्र : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैन स्थानक, दत्तानगर, पो0 पुना-46, महाराष्ट्र, फोन : 09822039728.

16. दिल्ली, अशोक विहार

1. डॉ0 श्री स्नेहप्रभा जी
2. साध्वी डॉ0 श्री प्रजाश्री जी

चातुर्मास स्थल : श्री एस0 एस0 जैन सभा, एफ- ब्लॉक, फेज - 1, अशोक विहार, दिल्ली- 110052, फोन : 09810212783.

17. ऐलनाबाद, हरियाणा

1. महासाध्वी श्री शुभा जी
2. साध्वी श्री सुप्रतिभा जी
3. साध्वी श्री सुप्रगति जी

सम्पर्क सूत्र : जैन धर्म स्थानक, जैन पारस, नियर श्री गणेश मंदिर, ऐलनाबाद-121502, सिरसा, हरियाणा, फोन 8901342124.

18. उदयपुर, राजस्थान

1. श्री हेमवती जी

सम्पर्क सूत्र : श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, गुरु पुष्कर मार्ग, शास्त्री सर्कल, उदयपुर, राजस्थान-313001, फोन नम्बर : 0294-2413518

19. उदयपुर, राजस्थान

1. डॉ० श्री हर्षप्रभा जी

सम्पर्क सूत्र : श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, गुरु पुष्कर मार्ग, शास्त्री सर्कल, पो० उदयपुर, राजस्थान-313001, फोन नम्बर : 0294 -2413518

20. चैन्नई, तमिलनाडु

1. महासाध्वी श्री सुप्रभा जी म० सा०

सम्पर्क सूत्र : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, चैन्नई।

Information courtesy: Shri Pushpendra Muniji, E-Mail : pushpendramuni@gmail.com, Shri Tarak Guru Jain Granthlaya, Guru Pushkar Marg, Shastri Circle, Udaipur, Rajasthan-313001, E-Mail – tguru1966@gmail.com

NEW WEBSITE ON JAINISM

www.agrajainsamaj.com - आपके सामने प्रस्तुत है एलीट सोसाइटी कि अत्याधुनिक खोज www.agrajainsamaj.com इस बेबसाइट के मध्यम से अब आगरा मे होने वाली हर घटना या कार्यक्रम कि विस्त्रत जानकारी पूरी दुनिया बिना समय गवाये देख सकेगी जानकारी प्राप्त कर सकेगी। सोसाइटी कि इस पेशकश मे जैन शिरोमणी , जैन एलर्ट , जैन डाइरेक्टरी , जैन येलो पेजिस , जैन समाचार , जैसे अत्य आधुनिक सुविधाये उपलब्ध है।

MISCELLANEOUS NEWS

पैसे की गर्मी चढ़ गई है जैन समुदाय को: राज ठाकरे



अभी तक यूपी और बिहार के लोगों पर भड़कने वाले राज ठाकरे पहली बार जैन समुदाय पर भी जमकर बरसे। राज ने जैन धर्मावलंबियों पर निशाना साधते हुए कहा कि जैन धर्म वालों को पैसे की गर्मी चढ़ गई है। राज ने कहा कि मुंबई में भगवान महावीर की मूर्ति के 200 साल पूरे होने पर जैन समुदाय के लोगों ने महानगर के घर-घर में जाकर आमरस बांटा। उन्हें पैसे की इतनी ही गर्मी है तो सूखाग्रस्त जिलों में जाकर लोगों को पानी बांटे। जैन समुदाय के लोग मुंबई और महाराष्ट्र की जमीन से ही धन अर्जित करते हैं और महाराष्ट्र में सूखा पड़ने पर इस तरह का जश्न मनाते हैं। ठाकरे ने चेतावनी दी

कि अगली बार अगर वे ऐसा करते हैं तो मनसे उनसे अपने तरीके से निपटेगी। इसके अलावा राज ने महाराष्ट्र के उन मंत्रियों और विधायकों पर भी निशाना साधा है जो विदेश दौरे पर जा रहे हैं। राज का कहना था कि एक ओर महाराष्ट्र में सूखा पड़ा है वहीं प्रदेश के कुछ मंत्री और विधायक मौज-मस्ती के लिए लंदन जा रहे हैं। बुधवार शाम कार्यकर्ताओं के शिविर में ठाकरे ने कार्यकर्ताओं से अपील की कि विदेश दौरे पर जाने वाले मंत्रियों और विधायकों को उनके क्षेत्रों में प्रवेश नहीं करने दें।

एक लाख यूनिट रक्त का संग्रह कर एक विश्व रिकार्ड बनाया जाएगा-तेरापंथ युवक परिषद



केन्द्रीय युवा मामले एवं खेल मंत्री श्री अजय माकन ने कहा कि राष्ट्र एवं समाज के समग्र विकास के लिए युवापीढ़ी की सक्रियता एवं जागरूकता जरूरी है। श्री माकन ने आज अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के प्रतिनिधि मंडल से चर्चा करते हुए उक्त उद्गार व्यक्त किये। श्री माकन ने आचार्य श्री महाश्रमण के अमृत महोत्सव पर अपनी शुभकामनाएं प्रदत्त करते हुए कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण ऐसी विभूति हैं जो अपने मुख से ज्ञान देते हैं और वही ज्ञान प्रभावी होता है जो सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की भावना से दिया जाता है। ऐसे संतों के उपदेशों से समाज को नई प्रेरणा मिलती है।

यह प्रतिनिधि मंडल परिषद के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ के नेतृत्व में श्री माकन से मिला और उन्हें 17 सितम्बर 2012 को राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित हो रहे विशाल रक्तदान शिविर की जानकारी दी। यह शिविर लगभग 300 शाखा परिषदों के माध्यम से राष्ट्रव्यापी स्तर पर आयोजित होगा जिसमें करीब एक लाख यूनिट रक्त का संग्रह कर एक विश्व रिकार्ड बनाया जाएगा। इस इवेंट के ऐम्बेसडर प्रख्यात क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर हैं।

प्रतिनिधि मंडल ने अभातेयुप के संगठन मंत्री एवं रक्तदान शिविर के मुख्य सूत्रधार श्री राजेश सुराणा, अणुव्रत महासमिति के प्रचार-प्रसार मंत्री श्री ललित गर्ग, सक्रिय कार्यकर्ता श्री बलराज स्वामी, श्री राजेश सिंह आदि प्रतिनिधि मंडल में शामिल थे। इस अवसर पर अभातेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ ने आचार्य श्री महाश्रमण के नेतृत्व में संचालित हो रही विभिन्न रचनात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि युवकों की एक विशाल टीम लगभग साढ़े तीन सौ शाखा मंडलों के माध्यम से समाज में नशामुक्ति, रूढ़ि-उन्मूलन के साथ-साथ नेत्रदान, अंगदान, शरीरदान के विशिष्ट कार्यक्रमों को लेकर सक्रिय है। प्रेषक: ललित गर्ग, ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट, 25, आई0 पी0 एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092, फोन : 9811051133, E-Mail : lalitag11@gmail.com

DEVLOK GAMAN

Mahasati Shri Madan Kunwar Ji Maharaj disciple of up-pravartini mahasati Shri Vimal Vati Ji Maharaj belonging to Shwetambar Sthanakwasi Shraman Sangh left for her heavenly abode after prolonged illness. She had accepted santhara at Jodhpur on the 12th May, 2012. Condolence meeting to offer shradhanjali and pay homage to the departed soul was held at Jodhpur on the 13th May in the holy presence of Shri Raj Tilak Vijay Ji Maharaj, Shri Moksh Tilak Vijay Ji Maharaj, Mahasati Shri Vimal Vati Ji Maharaj, other Sadhwi and large number of devotees from Shwetambar sect.

DISCLAIMER - Although AHIMSA TIMES NEWS uses its best efforts to ensure the accuracy of the content on the site, sometimes, errors, mistakes or inaccuracies may creep in inadvertently. We make no guarantees as to the accuracy, correctness or reliability of the contents. We may also change the content of this site, at any time, without prior notice. In no event shall Ahimsa Times be liable to anyone for any damages of any kind arising out of or in connection with the use of this service. You agree to indemnify and hold Ahimsa Times harmless from any and all claims, liabilities, damages, costs and expenses including lawyer's fees, arising from any use of any information from this. We also request all over readers to inform us of any inaccuracies, omissions and errors etc. noticed by them so that necessary corrections can be timely incorporated.

**WE HEARTILY WELCOME FOLLOWING NEW MEMBERS WHO HAVE JOINED
WWW.JAINSAMAJ.ORG DURING THE MONTH OF JUNE 2012**

1. Arihant Bothra,Swetambar,Solapur,Maharashtra,Business
2. Ajit Kumar Jain,Digambar,Udaipur,Rajasthan,Business
3. Amit Dungarwal,Swetambar,Secunderabad,Andhra Pradesh,Business
4. Amit Kshirsagar,Digambar,Wardha,Maharashtra,Others
5. Rahul Jain,Swetambar,Varanasi,Uttar Pradesh,Business
6. Kamlesh Jain,Digambar,Indore,Madhya Pradesh,Management
7. Arnave Jain,Swetambar,Bikaner,Rajasthan,Finance
8. Nitesh Bothra,Swetambar,Kolkata,West Bengal,Business
9. Amit Kotadia,Swetambar,Nandurbar,Maharashtra,Student
10. Neeraj Jain,Swetambar,Bangalore,Karnataka,Business
11. Deepak Modi,Swetambar,Bhadesar,Rajasthan,Marketing
12. Nilesh Jain,Swetambar,Udaipur,Rajasthan,Arts
13. Bhaskar Jain,Swetambar,Coimbatore,Tamilnadu,Engineer
14. Vikash Jain,Swetambar,Bikaner,Rajasthan,Business
15. Rahul Kumar Jain,Digambar,Agra,Uttar Pradesh,Business
16. Piyush Patodi,Digambar,Jhalawar,Rajasthan,Service
17. Vijaya Kumar Jain,Swetambar,Chennai,Tamil Nadu,Business
18. Jaideep Kumar Garga,Digambar,Raipur,Chhattisgarh,Business
19. Mahaveer Kumar Bhansali,Swetambar,Bangalore,Karnataka,Business
20. Pankaj Jain,Digambar,Alwar,Rajasthan,Student
21. Kamlesh Kumar Jain,Swetambar,Surat,Gujarat,Business
22. Anil Kumar Lodha,Swetambar,Raj Nagar,Rajasthan,Consultancy
23. Sanjay Kumar Baid,Swetambar,Rajnand Gaon,Chhattisgarh,Others
24. Gaurav Jain,Swetambar,Ujjain,Madhya Pradesh,Service
25. Chetan Kumar Jain,Digambar,Lakheri,Rajasthan,Academics
26. Arun Kumar Barjatiya,Digambar,Sikar,Rajasthan,Service
27. Himanshu Mehta,Swetambar,Sojat Road,Rajasthan,Business
28. Rajesh Nahar,Swetambar,Bangalore,Karnataka,Business
29. Mahavir Kumar Jain,Digambar,Dungarpur,Rajasthan,Government
30. Narendra Jain,Swetambar,Rajnandgaon,Chhattisgarh,Industrialist
31. Bhawar Lal Lodha,Swetambar,Ichalkranji,Maharashtra,Business
32. Parag Jain,Swetambar,Indore,Madhya Pradesh,Consultancy
33. Jitesh Jain,Swetambar,Mumbai,Maharashtra,Service
34. Prakash Chand Lalwani,Swetambar,Beawar,Rajasthan,Retired
35. Sukan Singh Jain,Swetambar,Bhilwara,Rajasthan,Others
36. Vikkey Jain,Swetambar,Kanchipuram,Tamilnadu,Business
37. Praveen Kumar Mandawat,Swetambar,Fateh Nagar,Rajasthan,Business
38. Mahendra Kumar Jain,Digambar,Indore,Madhya Pradesh,Engineer
39. Sweetie Jain,Digambar,Kolkata,West Bengal,Socialwork
40. Hitesh Chajjed,Swetambar,Bangalore,Karnataka,Business
41. Neha Chaplot,Swetambar,Udaipur,Rajasthan,Management
42. Siddhartha Chaplot,Swetambar,Udaipur,Rajasthan,I.T.
43. Barkha Chaplot,Swetambar,Udaipur,Rajasthan,Arts
44. Bhagwati Chaplot,Swetambar,Udaipur,Rajasthan,Others
45. Ganpat Lal Chaplot,Swetambar,Udaipur,Rajasthan,Service
46. Sandeep Kumar Mehta,Swetambar,Kishangard,Rajasthan,Business
47. Nikhil Bora,Swetambar,Pune,Maharashtra,Business
48. Rakesh Kumar Jain,Swetambar,Madurai,Tamilnadu,Business
49. Deepak Aggarwal,Digambar,Moujpur,Delhi,Others

World Jain Directory
Place request to add your free
listing in
World's largest Jain Directory
on
www.jainsamaj.org
Click here to submit
FORM

Matrimonial Candidates

This Matrimonial Service is free for all Jain candidates

Click Online Individual Profile or Visit www.jainsamaj.org "Matrimonial Section" for details



BRIDES

1. Vidhi Shah,42,Digamber,Ahmedabad,Gujarat,Others
2. Aanchal Jain,26,Swetamber,Zakir Hussain Marg,Delhi,Service
3. Hetal Kirti Doshi,26,Swetamber,Banglore,Karnataka,Others
4. Viral Avalani,28,Swetamber,Junagadh,Gujarat,Engineering
5. Dhvani Shah,20,Swetamber,Sami,Gujarat,Others
6. Pratik Desai,23,Digamber,Ichalkaranji,Maharashtra,Business
7. Kirti Mehta,27,Swetamber,Jodhpur,Rajasthan,Divorcee
8. Kratika Jain,42,Digamber,Bhopal,Madhya Pradesh,Engineering
9. Rinki Jain,24,Swetamber,Rohini,Delhi,Business
10. Rani Khinvasara,30,Swetamber,Pune,Maharashtra,Medicine



GOOMS

1. Parth Sheth,22,Digamber,Ahmedabad,Gujarat,Service
2. Prashant Munot,25,Swetamber,Ahmed Nagar,Maharashtra
3. Manish Jain,28,Digamber,Laxmi Nagar,Delhi,Engineering
4. Jinendra Jain,29,Digamber,Indore,Madhya Pradesh,Business
5. Deepak Kumar Jain,26,Digamber,Hindaun City,Rajasthan,Computer
6. Dharmendra Jain,42,Swetamber,Barmer,Rajasthan,Business
7. Dilip Jain,28,Digamber,Dungarpur,Rajasthan,Others
8. Raj Dalal,25,Swetamber,Ahmedabad,Gujarat,Engineering
9. Bhoor Chand Jain,42,Swetamber,Barmer,Rajasthan,Service
10. Vikram Mehta,29,Swetamber,Udaipur,Rajasthan,Business
11. Sonam Jain,27,Swetamber,Ambala Cantt,Hararyana,Business
12. Abhishek Jain,27,Digamber,Indira Gandhi Road,Delhi,Computer
13. Harsh Deep Jain,25,Digamber,Yamuna Nagar,Haryana,Business
14. Neelesh Jain,27,Digamber,Hyderabad,Andhar Pradesh,Engineering
15. Vikram Mehta,29,Swetamber,Udaipur,Rajasthan,Business
16. Manoj Jain,34,Digamber,Jaipur,Rajasthan,Divorcee
17. Bhavesh Parekh,27,Digamber,Pune,Maharashtra,Computer
18. Akshay Kumar Jain,26,Digamber,Kanpur,Uttar Pradesh,Computer
19. Mahati Sagar Shaha,24,Digamber,Nallasopara,Maharashtra,Engineering
20. Prashant Patangia,28,Digamber,Nalasopara,Maharashtra,Business
21. Dharmendra Jain,27,Digamber,Mehgoan,Madhya Pradesh,Others
22. Rahul Pamecha Jain,22,Swetamber,Nathdwara,Rajasthan,Business
23. Ashish Kumar Jain,27,Digamber,Newai,Rajasthan,Business
24. Dhiraj Kumar Jain,28,Swetamber,Bikaner,Rajasthan,Others
25. Mehul Shah,30,Swetamber,Ahmedabad,Gujarat,Business
26. Inder Chand Jain,32,Swetamber,Arcot,Tamilnadu,Business
27. Arpit Chopra,26,Swetamber,Ajmer,Rajasthan,Engineering
28. Bhupesh Kumar Jain,30,Digamber,Dungar Pur,Rajasthan,Business
29. Amit Jain,30,Digamber,Shahadra,Delhi,Engineering

Jainsamaj Matrimonial
Database

For widest matrimonial
choice add. your profile on
www.jainsamaj.org
for Rs. 850/-for one year.
Click here to submit profile
FORM

JAIN BUSINESS DIRECTORY -WELCOME TO NEW MEMBERS - JUNE 2012

1. Kalash Enterprises,Aurangabad,Maharashtra,Medical
2. Ssdjj,Belgaum,Karnataka,Astrology
3. Oc Plan,Coimbatore,Tamilnadu,Consultants
4. Lodha& Associates,Rajnarar,Rajasthan,Consultants
5. Siddhchakra Steels,Ahmedabad,Gujarat,Exporters/Importers
6. Vardhman Group,Jetpur,Gujarat,Share Brokers
7. Kanakratna Jewellery,Mumbai,Maharashtra,Exporters/Importers
8. Kanakratna Exim Pvt. Ltd.,Mumbai,Maharashtra,Jewellery
9. Navpad Udyog,Ahmedabad,Gujarat,Household Items
10. Singhvi Traders,Tirupur,Tamilnadu,Trading
11. Cyber Hut,Vadodara,Gujarat,Computers
12. Shri Shivshakti Prak,Jaipur,Rajasthan,Publications
13. Prithvi Computers,Mumbai,Maharashtra,Computers
14. Deepak Medicals,Bijapur,Karnataka,Medical
15. Arihants,Karol Bagh,Delhi,Finance
16. H. L. Huf,Ahmedabad,Gujarat,Textiles
17. Mohan Lal & Com,Jaipur,Rajasthan,Trading
18. Annapurna Hing Pvt. Ltd.,Ahmedabad,Gujarat,Food
19. Rishabh Trading,Bilaspur,Chhattisgarh,Equipments
20. Patwari Bakers Pvt.Ltd.,Madurai,Tamilnadu,Food
21. Jain Bakers,Bangalore,Karnataka,Food
22. Kantech Rubber Indus,Ahmedabad,Gujarat,Trading
23. Lokmanya Lubricant,Rajsamand,Rajasthan,Trading

Promote and Inter Society
Business
Jain World Business
Directory

www.jainsamaj.org

Free Business Listing only for Jain
Organizations Around The World
Click here to submit your company
profile

ENTRY FORM

Advertisement Tariff - "AHIMSA TIMES"



MAIL YOUR EMAIL ADDRESS FOR FREE COPY OF "AHIMSA TIMES" AND OTHER JAIN CIRCULARS

